एक फूटकळ पत्र–अन्तर्गत शब्दयादी

कान्तिभाई बी. शाह

आचार्यश्री शीलचन्द्रसूरिजी महाराजने प्राप्त थयेल केटलांक फूटकळ पत्रो पैकीना एक पत्रमां कोई अभ्यासु जीवे केटलाक अपभ्रंश/जूनी गुजरातीना शब्दो संगृहीत कर्या छे. ए साहित्यना स्वाध्याय–वांचन माटे एमने ए उपयोगी जणाया हशे. एमणे करेली शब्दयादीमां प्रत्येक शब्दनी सामे संस्कृत अर्थो आपेला छे.

पू. महाराजश्रीए संस्कृतार्थवाळी आ शब्दयादीमां वर्तमान गुजरातीमां अर्थ अने जरूरी लागे त्यां टिप्पण आपवानुं मने सोंप्युं. शब्दोना चोकसाईभर्या गुजराती अर्थो मेळववा माटे, जयन्त कोठारी सम्पादित 'मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश'मां पत्र–अन्तर्गत यादीमांना शब्दो क्रमशः जोवा मांड्या. त्यारे ख्याल आव्यो के आमांना मोटा भागना शब्दो 'म.गु.श.'मां नोंधायेला हता अने ते बधां स्थानोए 'उक्तिरत्नाकर' ग्रन्थनो आधार लेवायो हतो.

'उक्तिरत्नाकर' ग्रंथ श्रीसाधुसुन्दरगणीए रच्यो छे. कर्ताना सर्जनकाल ई. १६२४–१६२७ना गाळामां एनी रचना थई छे. ई. १९५७मां श्रीजिनविजय मुनिए आ ग्रन्थनुं सम्पादन कर्युं छे. आ सम्पादनमां 'उक्तिरत्नाकर' उपरांत बे अज्ञातकर्तृक औक्तिको पण एमां सामेल कराया छे. आ कृतिओमां जूनी गुजराती भाषाना शब्दोनी समज माटे संस्कृत पर्यायो अपायेला छे.

फूटकळ पत्रनी प्रस्तुत शब्दयादीमांना संस्कृत पर्यायो अने 'म.गु.श.'मां नोंधायेला 'उक्तिरत्नाकर'ना संस्कृत पर्यायोनी समानता परथी ए तो निश्चित थयुं के आ शब्दयादी मोटे भागे 'उक्तिरत्नाकर'ना सम्पादन ग्रन्थमांथी करवामां आवी छे.

जयन्त कोठारीए 'उक्तिरत्नाकर' ग्रन्थनो 'म.गु.श.'मां उपयोग करती वखते, गुजराती अर्थ आपवामां, ते ग्रन्थमां अपायेला संस्कृत पर्यायोनो आधार लीधो छे खरो, पण बधां स्थानोमां व्युत्पत्ति तरीके ए संस्कृत पर्यायोनी प्रमाणभूतता स्वीकारी नथी. केटलाक संस्कृत पर्यायो तो मूळ शब्दना कृत्रिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संस्कृतीकरण रूपे पण जोवा मळे छे. छतां बिनसंशयात्मक लागेला के अन्य आधारग्रन्थोमांथी सांपडता प्रमाणभूत संस्कृत शब्दोने व्युत्पत्तिस्थान तरीके दर्शाव्या छे.

अहीं में शब्दयादीना वर्तमान गुजराती अर्थ आपवामां मुख्यतया 'म.गु.श.'नो आधार लीधो छे. ते उपरांत क्वचित् 'सार्थ गुजराती जोडणीकोश' तेमज हिन्दी शब्दकोशनी पण सहाय लीधी छे. शक्य बन्युं त्यां व्युत्पत्ति आपी छे. अने जरूरी लाग्युं त्यां टिप्पणी (टि.) मूकी छे.

पत्रनी शब्दयादीनो क्रम यथावत् राख्यो छे. यादीमां नोंधायेला संस्कृत पर्यायो प्रत्येक शब्दने छेडे चोरस कौंस [] मां मूक्या छे.

मूळ ग्रन्थमांथी शब्दयादीनो उतारो करवामां केटलाक शब्दो खोटी रीते उतारायानुं पण मालूम पड्युं छे. क्यांक मूळ शब्द अने संस्कृत पर्याय भेगा लखायेला छे तो क्यांक एक शब्दनो अक्षर बीजा शब्दमां सरकी गयो छे. शक्य बन्युं त्यां आवां स्थानोए शुद्धि करी लीधी छे छतां अर्थ ज्यां मळ्यो नथी के संस्कृत पर्याय साथे मेळमां लाग्यो नथी के अर्थ अपाया छतां संशय रह्यो छे त्यां प्रश्नार्थ (?) कर्यो छे.

होउ = थयुं (सं. भू परथी) [एवं हवइ]

अथ = हवे, आरंभ (टि. 'अथ' संस्कृत शब्द छे.)

प्रत्युत = किंवा, बीजी रीते, ऊलटी रीते (टि. 'प्रत्युत' संस्कृत शब्द छे.)

पूठिइं = पाछळ, - नी पछी [अनु]

सामहु = सामुं(सं. संमुखकम् > सामहउ) [अभिमुख]

डावउ = डाबो (दे०) [वाम]

पाधरउ = सीधो, सरळ, भलोभोळो (सं. प्राध्वर; दे. पद्धर)[ऋजु, सरल]

हेठि = नीचे [अधः]

ऊपरि = उपर [उपरि]

आडउ = आडो, विघ्नरूप, अडपलो [तिर्यक्]

त्रीच्छउ = तीरछो, वांको, आडो, कतरातो [तिरश्चीनः]

(सं. तिरश्चीन > प्रा. तिरिच्छ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगलि = आगळ, अग्रस्थाने, समक्ष, पहेलां, हवे पछी (सं. अग्र + ल)
[अग्रे, पुरः]

पच्छिलिउ = पाछलो, पाछळनो (सं. पश्च > पच्छ+ल) [पाश्चात्यः]

सरीखउ = - ना जेवो, सरखो (सं. सदृक्षः) [सदृक्]

समान = - ना जेवुं, सरखुं. [अतिसउल] (?)

तादृक्षः = तेना जेवुं, आबेहूब [तादृशः]

अनेसउ = अनोखो (सं. अन्यादृशः) [अन्यसदृक्, अन्यसदृशः, अन्यसदृक्षः]

तूं सरीखऊ = तारा जेवो [त्वादृशः]

मूं सरीखउ = मारा जेवो [मादृशः]

तुम्ह सरीखउ = तमारा जेवो [युष्मादृशः]

अम्ह सरीखउ = अमारा जेवो [अस्मादृशः]

अरहउ = नजीक, अहीं, आगळ, आम (सं. आरात्) [अर्वाक्]

परहउ = दूर, तहीं, पाछळ, पछी तेम (सं. परात् / परस्मिन्) [पराक्]

(टि. जूनी गुज.मां 'अरहउ-परहउ' अने अर्वा. गुज.मां 'अरुपरु' एम सामासिक शब्दप्रयोग वधु प्रचलित छे. जेनो अहींतहीं, आमतेम, नजीकदूर, आगळपाछळ - एवा अर्थसंदर्भे वपराश छे. 'ओरुं' = नजीक ए शब्द साथे अरहउ > अरुनुं उच्चारसाम्य जोई शकाशे.)

पारवलि (?) = पार पामेलो, पारंगत, भणेलो (?) [पठितः]

सर्वतो = सर्व प्रकारे, बधी बाजुए, चोतरफ (सं. सर्वतः) [विश्वक्]

समन्तात् = सर्वत्र [समन्ततः]

उगउमुगउ = ऊगोमूगो [अवाङ्मूकः]

(टि. वर्तमानमां आवो शब्दप्रयोग प्रचलित नथी. 'म.गु.श.'ना सम्पादक आ शब्दने द्विरुक्त प्रयोग गणे छे. अहीं अपायेलो संस्कृत पर्याय व्युत्पत्ति तरीके अस्वीकार्य छे.)

झलझांखसउं = भळभांखळुं, मळसकुं [चलद्ध्वाङ्क्षम्]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊंधाधलउं = ऊंधांधळुं, झांखुं, चूंखडुं, चूंचळुं, मंद दृष्टिवाळुं [उद्वलिकम्]
सूगामणउं = सूग उपजावनारुं, घृणास्पद (सं. 'शूक' परथी.) [सूकाजनकम्]
अहिवा = विधवा (सं. अधवा) [अविधवा]
सूहव = सौभाग्यवती, सधवा स्त्री (सं. सुधवा) [सुधव]
उत्तरिण्यु = ऋणमुक्त (हिं. उतरिन) [उत्तारितऋणम्]
पडू = जामीनगीरी आपनार, जामीन, जामीनदार [प्रतिभू]
(सं. प्रतिभूः > पडहू > पडू)
पडूचउं = जामीनगीरीमां मूकेली वस्तु [प्रतिभाव्यम्]
ऊपरियामणउं = व्याकुलता, खेद, चिंता [उत्कलिकाकुलं रणरणकं वा]
उल्यु = ओल्युं, पेलुं [अर्वाचीन] (?)
पयलउ = पेलो, पेलुं [पराचीनउ] (?)
विलखउ = उदास, करमाई गयेलुं, फिक्कुं (सं. विलक्ष) [विलक्षः]
डहरवार = ? [जयद्रथवेला] (?)
(टि. 'म.गु.श.'मां डहर = खाबोचियुं (सं. दहरः) मळे छे.)
तांगलिणी = मळविसर्जन करवुं ते. [तनुगमनिका]
(टि. 'म.गु.श.'मां 'तांगणी' छे.)
गोईगोसली = ? [गोप्यशिलाका]
(टि. 'म.गु.श.'मां अर्वा. गुज. अर्थ अंगे प्रश्नार्थ छे.)
ऊकरडी = नानो ऊकरडो, विवाह प्रसंगे कचरो पूंजो नाखवानी जगा. (दे. उक्करडी) [अवकरोत्करिता]
पुञ्जो = ढगलो (सं. पुञ्ज) [अवकरः]
चउकीवटु = बाजोठ, बेसवानी पाट (सं. चतुष्कपट्टः) [चतुष्कपट्टः]
वटवालनउं = वोळावियापणुं [वर्त्मपालनं]
बेहडउं = बेडुं [द्विघटम्]
गूढउं = छानुं, घेरुं, न समजाय तेवुं (सं. गुह्य) [गुदगूढम्]
खिसरहंडी = ? [क्षिप्रसरहिंडिका]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(टि. 'म.गु.श.'मां शब्द नोंधायेल छे, पण अर्वा. गुज. अर्थ परत्वे प्रश्नार्थ.)

उरसडं = ? [वघर्षः] (?)

वेसरद् = ? [विशरीरी] (?)

अरतपरत बाप सरीखउ = आकृतिए प्रकृतिए बापना जेवो.

(सं. 'आरात् परात्' परथी) [आकृत्या प्रकृत्या पितासदृशः]

अगेवाणु = आगेवान, आगळ रहेनार, मोखरानुं (सं. 'अग्र' परथी) [अग्रेनीकः]

पछेवाणु = पाछळ रहेनार, पाछळ रहेवुं ते. [पश्चादनीकम्]

वूसट = तमाचो [चपेटा]

चूहुण्टी = ? [चुञ्चपटिका] (?)

कावडि = कावड (दे.) [कायाटना, कायविलिनी]

गरढउ = घरडो, वृद्ध (सं. जरठ) [गतार्थवयः]

वच्छीयात = आडतियो [वस्तुवित्तः]

नीक = पाणी जवानो मार्ग [नीराक्षा]

(टि. 'नीक' संस्कृत छे. पण 'नीक'नो बीजो अर्थ 'हाथपग दुखवानो के खंजवाळनो रोग' पण थाय छे. (सं. नीरक्ता परथी.) 'म.गु.श.'मां 'उक्तिर०'नो आ शब्द बन्ने अर्थमां नोंधायेलो छे.)

उसलसींधरुं = ? [उल्लासितसन्धिकम् के उतशलंध्र] (?)

(टि. 'म.गु.श.'मां आ शब्द 'उक्तिर०' मांथी 'ऊसलसीधुं' रूपे नोंधायेलो छे. अर्वा. अर्थ अंगे प्रश्नार्थ.)

वेगडि = सीधां खुल्लां मोटां शिंगडांवाळी गाय, उत्तम प्रकारनी गाय.

(सं. 'विकट' परथी.) [विकटशृङ्गी]

मीढी = वांकां शिंगडांवाळी [मिलितशृङ्गी]

कुण्डली = कुंडाळुं-गूंचळुं वळेलां शिंगडांवाळी [कुण्डलितशृङ्गी]

लिपसणउं = लपसणुं [लिप्सायनम्]

(टि. 'म.गु.श.'मां आ अर्थ अटकळे अपायो छे.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वहली = वसूकी गयेली [वीतवेत्रा]

पटान्तरम् = पडदो, अन्तराय, भेद [प्रत्यन्तरम्]

(टि. 'म.गु.श.'मां आ शब्द 'पटांतरुं' एम नोंधायेलो छे.)

विहाजाहरी (?) = ? [विजयगृहा] (?)

कोठउं = कोठो, ओरडो [कोष्ठकः]

डोकर = वृद्ध, घरडो (दे. डोक्कर) [डोलत्करः]

छेकडी = छेकवानुं साधन के छिद्र पाडवानुं साधन. [छिद्रकरी]

(टि. 'म.गु.श.' आ अर्थने तेमज अहीं अपायेला संस्कृत पर्यायने संशयात्मक गणे छे.)

सीरामणु = भातुं, सवारनो नास्तो [शीताशनम्, शरीराप्पयकं वा]

सउडी = रजाई, सोड [संवृतपटी]

(टि. 'म.गु.श.' 'सउडी' ने देश्य शब्द गणे छे.)

सीरख = रजाई, गोदडी (टि. राजस्थानमां प्रचलित) [शीतरक्षा]

तुलाई = तळाई, गादलुं [तूलिका]

उसीसउं = ओशीकुं (सं. उच्छीर्षकम्) [उपधानम्] ?

सिलाट = सलाट [शिलाघटिकः]

(टि. 'म.गु.श.'मां 'उक्तिर॰'मांथी ज आ शब्द 'सिलावटउ' रूपे नोंधायेलो छे अने एनी व्युत्पत्ति छे सं. शिलावर्त्मकः)

खण्डायतु = तलवारधारी [खड्गवित्तः]

जच्छायतु (?) = भाथाधारी [तूणवित्तः]

(टि. अहीं संस्कृत पर्यायना 'तूण' शब्दने आधारे अर्वा. अर्थ आप्यो छे.)

पूणी = ? [पिचुमर्दी]

आडण = अंगशोभा, अंगमण्डन [अङ्गमण्डनम्]

खडोखली = क्रीडा माटेनी वाव, होज, कुण्ड. [दीर्घिका]

(दे. खडु + ओखली)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बगाई = बगासुं [जृम्भिका]

चीपडउ = चपटुं ? [चिपटः]

(टि. 'सार्थ जोडणीकोश' 'चीपडुं'नी व्युत्पत्ति प्रा. चिप्पड (= चपटुं) आपे छे. 'म.गु.श.'मां 'उक्तिर०' मांथी 'चीपडीउ, चीपिडउ' शब्द नोंधायेल छे. एनो अर्वा. गुज. अर्थ 'एक झेरी जीवडुं' मळे छे. (सं. चिपिटकः)

गूंहली = गरोळी [गोमुखा]

(टि. 'म.गु.श.'ने आ अर्थ विशे संशय छे.)

कोसीढ(ट ?)उ = रेशमनो कीडो ? [कोषसमृद्धः]

(टि. 'म.गु.श.'मां 'उक्तिर०'नो 'कोसींटउ' शब्द छे. अर्थ 'रेशमनो कीडो, एनुं कोकडुं' मळे छे. त्यां संस्कृत पर्याय 'कोषस्थः' अपायो छे.)

चणहटी = कोई प्राणीनाम ? [चणकप्रवर्तकः]

(टि. 'म.गु.श.'मां आ शब्द 'चणहडीउ' रूपे 'उक्तिर०'मांथी नोंधायेलो छे. अने त्यां एनो संस्कृत पर्याय 'चणकवर्तकः' अपायो छे.)

लउंकडी = लोंकडी (दे. लुंकडी) [लोमकटिका]

सवार = शीघ्र, सवेळा [सवेला]

कालाखरिउ = धीमेथी अक्षर शीखनार, वांचतां शीखवानुं शरू ज कर्युं होय तेवो. (सं. कालाक्षरिकः) [कृष्णाक्षरितः]

दाणीघणीउ = देवादार, करजदार [ऋणतः]

(टि. 'म.गु.श.' मां आ शब्द 'दाणी (घंणी), दाणीगणि' तरीके नोंधायेलो छे.)

त्रोटी = काननुं एक घरेणुं (रा.) [त्रिपुटी]

अजूयातउं = ? [उद्मद्यमानम्] (?)

(टि. 'अजूयालउं' शब्दनी संभावना. तो एनो अर्थ 'उजाळायेलुं' थाय. (सं. उज्ज्वालयितुम्)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊगडउ = ? [उहृदः]

बयकारु = गानार (सं. वाग्+गेयकार, प्रा. वइकार) [गोयकारु]

चिणोठी = चणोठी (दे. चिणोट्ठि) [चित्रपृष्ठा]

अडक = ? [अपराक्षा] (?)

(टि. 'म.गु.श.'मां 'अडकदडक' शब्द मळे छे, जेनो अर्थ 'दडी जवाय- गबडी पडाय' थाय छे.)

ढाकणउं = ढांकण ? ढांकवुं ते ? [छागनकम्]

सूणहरउं = शयनगृह [शयनगृहम्]

पाथरणुं = पाथरवा माटेनुं जाडुं कपडुं, जाजम [प्रसूरणम्]

उढणउं = ओढणुं, स्त्रीने ओढवानुं वस्त्र (दे. ओड्ढण) [आच्छादनम्]

नणंद = वरनी बहेन (सं. ननान्दृ > प्रा. णणंदा) [ननन्दा]

नणदोई = नणंदनो पति [ननान्दृपतिः]

जमाई = पुत्रीनो पति [जामाता]

नाणिद्रउ = नणंदनो पुत्र (सं. नानान्द्रः, रा.नांणदौ) [ननान्दृसुतः]

भत्रीजो = भाईनो पुत्र (सं. भ्रातृव्य > प्रा. भत्तिज्ज) [भ्रातृजः]

परीयटु = धोबी (दे. परिअट्ट) [निर्नेजकः]

छीपउ = कपडां रंगनारो, छीपो (दे. छिंपय) [रजकः]

कउतिगीउ = कौतुक-नवाई पमाडनार [कौतुकिकः]

फिरकः = फिरकी [स्फुरितचक्रिका]

पाटुव्याली = पादप्रहारिणी, पाटु मारती [पादप्रहारवती]

(टि. 'म.गु.श.'मां 'उक्तिर०'नो आ शब्द 'पाटूआली' रूपे नोंधायेलो छे.)

परमूणउ = परम दिवसनुं (सं. परमदिवसीय) [परमदिव]

परोकउं = पाछला वर्षे ? [प्राक्वर्षायाम्]

(टि. आ अर्थमां तळपदो शब्द 'पोर' वपराशमां छे.)

सरलउ = दीर्घ, प्रलम्ब (सं. सरल+क) [दीर्घः]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घडउ = घडो [घटः]

उघडहू = ? [उग्घट्टु] (?)

कहुआलउं = कोलाहल [कोलाहलः]

अरणइ = अरति, असुख, पीडा, शोक, चिन्ता [अरतिः]

मोलीउं = साफो, फेंटो (सं. 'मौलि' परथी) [मूर्द्धवेष्टनम्]

परिवारिउं = पार पडाएलुं ? आटोपायेलुं ? [प्रपारितम्]

पालटउ = पलटो, परिवर्तन [परिवर्त]

पालटिउं = पलटायेलुं, परिवर्तन पामेलुं [परिवर्तितः]

विहरउ = वहेरो, आंतरो, तफावत (सं. व्यवहार) [व्यतिकरः]

बापडो = बापडो, बिचारो, रांक (दे० बप्प) [वराकः]

(टि. 'म.गु.श.'मां आ शब्द 'प्रा.गु.का.'मांथी 'बप्पुडउ, बापुडउ' रूपे नोंधायेलो छे.)

लगाडिउ = लगाडायेलुं ? [लागितः]

पालउ = पगे चालतो, पाळो [पादचारः]

सोहिलुं = सुखभर्युं, सुखदायक (सं. 'सुख' परथी) [सुखावहम्]

दोहिलउं = दुःख आपनारुं, दोह्यलुं, कपरुं [दुःखावहम्]

(सं. दुःख + इल्ल)

रुलियामणो = रळियामणो, सुन्दर (दे. रली-परथी) [रतिजनकः]

उदेगामणउं = उद्वेग पेदा करनारुं [उद्वेगजनकम्]

राउताई = राजपूतपणुं, वीरत्व (सं. राजपुत्र-परथी) [राजपुत्रता]

असउणिउ = अपशुकनियाळ, अपशुकन पामेलो [अपशकुनितः]

अंबोडउ = अंबोडो [धम्मिल]

वीणि = वेणी, चोटलो [वेणी]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org